साम्यवादके बारेमें

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक २५

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १८ अगस्त, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

डांगे-विनोबा पत्रव्यवहार

[कम्युनिस्ट नेता श्री श्री० अ० डांगे और श्री विनोबाका यह पत्रव्यवहार दैनिक पत्रोंमें प्रकाशित हो चुका है। कम्युनिस्टोंके प्रति सर्वोदयका मनोभाव और खासकर हैदराबाद तथा सामान्यतः दूसरी जगहोंमें जमीनका सवाल समझनेके लिअे वह महत्त्वपूर्ण है, अिसलिअे अुसे यहां दिया जा रहा है। —सम्पादक]

केन्द्रीय कार्यालय,
हिन्दुस्तानकी कम्युनिस्ट पार्टी,
१९०—बी, खेतवाड़ी मेन रोड,
बम्बअी ४
ता० ७ जून, '५१

श्री विनोबा भावे,
गांधी आश्रम, वर्धा

प्रिय श्री विनोबा भावे,

मुझे आपसे कभी प्रत्यक्ष मिलनेका अवसर तो नहीं प्राप्त हुआ, लेकिन मैं सोचता हूं कि आप मेरे बारेमें अितना तो जानते ही हैं कि परिचय देनेकी आवश्यकता न रह जाय।

मैं आपको यह पत्र आपकी तेलंगाना-यात्रा और हैदराबाद जलमें बन्द हमारी पार्टीके कअी सदस्योंके साथ आपकी मुलाकातके सिलसिलेमें लिख रहा हूं। मैंने सुना है कि आपने अुनसे आम तौर पर 'तेलंगाना-आन्दोलन' के नामसे मशहूर सवाल पर और कुछ दूसरी बातों पर, जिनका ताल्लुक अुनकी रिहाअीसे था, अुनकी राय जानना चाही थी। अपने अेक साथीसे, जो हालमें ही छोड़ा गया है और जो आपकी मुलाकातके समय वहां हाजिर था, मैंने सुना है कि अुन लोगोंसे मिलनेमें आपका अुद्देश्य अुनका परिवर्तन करने या खुद परिवर्तित हो जानेका था। और जो प्रश्न आपने अुनके सामने पेश किया, वह यह था कि आन्तरराष्ट्रीय परिस्थितिमें हुअे फर्क, युद्धकी आशंका और अन्न-संकटसे अुत्पन्न देशकी हालत, आदि बातोंको नजरमें रखकर अुन लोगोंने, जिन्होंने तेलंगानामें हिंसाको अेक पद्धतिके रूपमें अपनाया, अिस सवाल पर फिरसे विचार किया है या नहीं; नहीं किया है तो वे फिरसे विचार करनेके लिअे तैयार हैं या नहीं? क्या अुनमें से किसीको अैसा लगता है कि कमसे कम मौजूदा परिस्थितिमें हिंसा योग्य नहीं है? आप अुनसे अिन सवालों पर खुले दिलसे बातचीत करना चाहते थे।

मुझे मालूम हुआ है कि हमारे साथी अिन सवालों पर आपसे बातचीत नहीं कर सके। अतः जेलकी जिन तकलीफदेह परिस्थितियोंमें अुन्हें रहना पड़ता था, आपके सामने सिर्फ अुनका अिजहार करके अुन लोगोंने सन्तोष माना।

मैं अुम्मीद करता हूं कि यह तो आपको स्पष्ट हो ही गया होगा कि आपके द्वारा अुठाये गये सवालों पर वे क्यों नहीं चर्चा कर सके। अुसका कारण यह नहीं था कि अुन्हें आपके प्रति अनादर है, या अुन अुसूलोंमें विश्वास नहीं है, जिन पर अमल करनेके कारण वे जेल गये हैं। पार्टीके शिष्ट सदस्यों या मित्रोंकी तरह अुन्होंने यह ठीक नहीं समझा कि वे कम्युनिस्ट पार्टीके सिद्धान्तों और नीतिके औचित्यके बारेमें गांधीवादके आपके जैसे प्रमुख अनुयायीका समाधान करनेका बोझ अपने अूपर अुठायें। अुन्होंने अिस कामको बाहरकी पार्टी पर छोड़ना ठीक समझा।

अिसके सिवाय, अंग्रेजी सत्ताके खिलाफ हमारे संघर्षके पुराने अितिहासके अुदाहरणोंसे, यह स्पष्ट है कि जेलकी चहारदीवारीके भीतर कैदियोंसे सिद्धान्तों और नीति पर अिस किस्मकी बातचीत अुन कैदियोंको तथा बाहरके दूसरे सदस्योंको भी अैसी अुलझनोंमें डालती है, जिन्हें जेलवासियोंको टालना ही अच्छा है। अिसलिअे ये समाचार जब मुझे मिले, तो मैंने आपको लिखना अुचित समझा।

आरम्भमें ही मैं आपको कह दूं कि हमारे लोगोंसे जेलमें और तेलंगानाके जिलोंमें मिलनेके आपके सद्भावकी मैं कद्र करता हूं। मेरा खयाल है कि अिस यात्रामें आपका मुख्य अुद्देश्य वहांकी जनता और अुनके जेलमें बन्द या बाहर छिपकर रह रहे नेताओंके लिअे फिरसे शान्तिमय जीवन बितानेकी परिस्थितियां निर्माण करनेका था। मैं आशा करता हूं कि आप यह मानेंगे कि हमारी पार्टीका भी कोअी दूसरा लक्ष्य नहीं है। सवाल यह है कि यह कैसे सिद्ध किया जाय?

आपकी बातचीतसे आप अैसा समझते मालूम होते हैं कि कम्युनिस्टोंने हिंसाको अपनाकर लोगोंको भी अपनी मांग हासिल करनेके लिअे वैसा ही करनेको बहकाया; बस तेलंगानाकी गड़बड़ीका यही कारण है। आप यह मानते दीखते हैं कि अेक बार हमने 'हिंसा' का त्याग किया कि शांति हो जायगी।

क्या आप समझते हैं कि अिस तरहकी बहससे कोअी अच्छा परिणाम आ सकेगा? आपने खुद ही यह प्रत्यक्ष कर दिया है कि तेलंगानामें मुख्य सवाल यह नहीं है कि हम लोग हिंसक हैं या अहिंसक। अगर अैसा होता, तो आपने अपनी यात्राका कार्यक्रम सिर्फ लोगोंको अहिंसाके गुण बताने और कम्युनिस्टोंकी तथाकथित हिंसाकी बुराअी दिखाने तक ही सीमित रखा होता।

लेकिन आपने तो अपना काम यहीं तक सीमित नहीं रखा। अखबारोंकी खबरोंसे तो मैंने यह समझा है कि आप अिस बातसे वाकिफ हैं कि वहां मुख्य सवाल किसानका है,—अुस किसानका जिसके पास जमीन नहीं है, या है तो बहुत थोड़ी है और जो लगान और महसूलोंकी अूंची दरों, कर्ज और बेगार तथा अिनका समर्थन करनेवाली शासन-प्रणालीके बोझसे पिसा जा रहा है। अिसीलिअे तो आपने अेक भू-निधि जैसी चीज शुरू करना और बेजमीन किसानोंको जमीन देना ठीक समझा। मेरा विश्वास है कि आपने अिस बातको समझ लिया और बता दिया है कि मुख्य

www.vinoba.in

सवाल जमीनका है और अुसे सुलझाये बिना हमारे देशकी समस्या हल नहीं हो सकती।

अगर आपका निष्कर्ष यही है, तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं और मेरे साथी अुस पर आपके साथ अेकमत हैं। और अितने वर्षों तक तेलंगानाकी लड़ाअी अिसी मुख्य अुद्देश्यको हासिल करनेके लिअे होती रही है। जब तक किसानको जमीन नहीं दी जाती, महंगे लगान, ब्याज और करोंका बोझ दूर नहीं किया जाता, जब तक अुसे अिनसे और बेगारसे नष्ट होनेसे बचाया नहीं जाता, तब तक अुसके लिअे जीवनकी शांतिमय परिस्थितियां असंभव हैं। अगर अुसकी ये मांगें पूरी नहीं होतीं, तो फिर वह अुस लाठी और बन्दूकको छोड़ भी दे, जिसे अुसने संभवतः अपनी रक्षाके लिअे अुठाया होगा, तो भी अुसे जीवनकी शान्तिमय परिस्थितियां नहीं मिलेंगी। हां, अुसे कब्रकी शान्ति मिल सकती है। लेकिन अुस शान्तिमें, अगर वह शान्ति है तो, जनताको कौनसा जीवन और कौनसी समृद्धि मिल सकती है?

आजकल हिन्दुस्तानमें हरअेक आदमी यह मानता है कि अगर हम अपनी अन्न-समस्या या कोअी भी समस्या हल करना चाहते हैं, तो किसानको जमींदारी प्रथाके बोझसे मुक्त कर देना चाहिये। सिर्फ जमींदार ही अिसे नहीं मानते। और जब किसान गरीबी और भूखसे तंग आकर अधीर हो जाता है और जमीन पर कब्जा करनेका निर्णय करता है तथा जमींदार और साहूकारको अपना विनाश करनेसे रोकता है, तो राज्यका सारा कोप अुसके सिर पर बरसने लगता है; क्योंकि कानूनने अुसे जमीन पर मेहनत करने और अपना पेट भरनेका अधिकार नहीं दिया है। अैसी स्थितिमें अगर कानून जीवनके विरोधमें खड़ा होता है, तो दोनोंमें बड़ा कौन है? मुझे विश्वास है कि आप यह मानेंगे कि जिन्दगी, लाखों-करोड़ोंकी जिन्दगी, कानूनसे बड़ी है; क्योंकि यहां कानून लाखोंकी जिन्दगीके अनुकूल नहीं है, सिर्फ मुट्ठीभर साहूकारोंके ही हितमें है।

तेलंगानामें ठीक यही हुआ है। शोषणकी अेकदम पुरानी और सड़ी-गली व्यवस्थामें रहनेवाले वहांके किसानों पर आजादी और लोकशाहीके युद्धोत्तर ज्वारका असर हुआ। वे अुत्साहित हुअे और सन् १९४६ में अुन्होंने जमींदारोंको अूंचा लगान देना या अुनकी बेगार करना बंद करनेका निश्चय किया। और जिनके पास जमीन नहीं थी, अुन्होंने बेकार पड़ी हुअी जमीन ले ली और अुस पर अन्न पैदा करनेके लिअे मेहनत करना शुरू कर दिया। जिनकी जमीनें लोभी जमींदारों और साहूकारोंने छीन ली थीं, वे वापिस आये और अुन्होंने मांग की कि वे अपनी जमीन जोतेंगे और अपना और अपने देशका पेट भरेंगे। यह सब जो हुआ वह हमारे देशके अुन संघर्षोंकी दीर्घ परम्पराके अनुसार ही था, जिन्हें हमने बीते हुअे जमानेमें अुत्तरप्रदेश, बिहार और बारडोलीमें देखा था। यह नेहरू-सरकारको दिल्लीकी गादी मिली, अुसके बहुत पहलेकी बात है। ये हमारे वही पुराने अदम्य किसान जीवन और जीविकाके लिअे अपनी परंपरागत लड़ाअी लड़ रहे थे।

किसानोंकी अिस न्यायोचित मांगका जमींदारों और सरकारने क्या अुत्तर दिया? अुन्होंने किसानों पर कहर ढानेके लिअे रजाकारोंकी खानगी और राज्यकी सरकारी फौज छोड़ दीं, ताकि जमींदारोंका किसानोंको जमीन न देने तथा अपना लगान वसूल करते रहनेका अधिकार जबरदस्ती कायम रखा जाय।

मुझे आपको पूरी दास्तान सुनानेकी जरूरत नहीं मालूम होती। आपने सरकारकी ओरसे तो अुसे सुन ही लिया है। तेलंगानाके किसानोंको क्या कहना है, वह दुहरानेकी मेरी अिच्छा नहीं है। अुनमें से सैकड़ों पुरुषों, स्त्रियों और बच्चोंको यातनायें दी गयीं हैं और मार डाला गया है या जेलमें ठूंस दिया गया है; और यह सब अिसलिअे कि वे जमीन और जीविकाके अपने अधिकारकी रक्षा करते थे।

मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप जरा ठहरें और सोचें कि अिन लाखोंमें ये यातनायें सहनेकी शक्ति कहांसे आयी। कोअी विचारधारा — वह हिंसाकी हो या अहिंसाकी — और कोअी भी पार्टी — वह आपकी हो या हमारी — गोलियां, यातनायें और घेरा सहने और अुसका वीरतापूर्वक मुकाबला करनेकी शक्ति लोगोंको नहीं दे सकती, अगर अुन्हें अिसका विश्वास न हो गया हो कि वे जो कुछ कर रहे हैं अुससे अुनके जीवनका सवाल हल होनेवाला है।

तेलंगाना-आन्दोलनको चलते हुअे आज पांच साल हो गये। यह अेक अच्छा संकेत है कि अब आप जैसे लोगोंने अिस सवाल पर ध्यान देना शुरू किया है। मैं अिस आंदोलनसे सम्बद्ध दूसरे सब सवालोंमें नहीं जाना चाहता। लेकिन सवालकी जड़को तो आपने खुद ही देख लिया मालूम होता है। और वह जड़ यह है कि किसान पर जुल्म हो रहा है, अुसे जमीन चाहिये और अुस व्यवस्थासे मुक्ति चाहिये, जो अिस जुल्मको बल देती है और चलाती है।

हम यहां हिंसा और अहिंसा या कानून और व्यवस्था की बहसमें नहीं पड़ेंगे; क्योंकि अगरचे हमारे खिलाफ यह आरोप किया जाता है, फिर भी हिंसा और कानूनभंग कोअी हमारा मान्य सिद्धान्त या तत्त्वज्ञान नहीं है। अिस बहसमें अगर हम अुतरें, तो मुख्य सवाल अेक ओर रह जायगा और हम अेक फिजूलकी अुलझनमें फंस जायंगे। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूं कि तेलंगानाका हरअेक किसान और हरअेक कम्युनिस्ट, अगर कहीं वह बंदूक लेनेके लिअे मजबूर हुआ है, तो बंदूक छोड़कर हल हाथमें लेनेके लिअे और अपने सिर पर मंडराती मौतके संकटको शांतिमय परिश्रमके लाभोंसे बदलनेके लिअे हमेशा तैयार है; हां, शांतिका आश्वासन अुसे मिलना चाहिये। लेकिन पिछले पांच वर्षोंसे अिस आश्वासनकी बजाय सबके सब अुसे नेस्तनाबूद करनेकी धमकियां ही देते रहे हैं। हो सकता है कि कभी-कभी राज्यका बल जन-बलसे ज्यादा जोरदार सिद्ध हो, लेकिन अिस तरह किसी जनताको सदाके लिअे कभी कुचला जा सका है?

कहा जाता है कि किसानोंने हमारी सलाहसे जमीन पर कब्जा करके, लगान और ब्याज देनेसे अिनकार करके और अिन जमींदारोंके लिअे बेगार करना छोड़कर कानूनका भंग किया है। लेकिन आप देख सकते हैं कि अगर कानूनको कुछ अिनेगिने लोगोंका अनुचर नहीं बनना है, तो कानून जीवनकी मांगके अनुसार हो यही ज्यादा न्यायसंगत है, बनिस्बत अिसके कि लाखों लोगोंको कानूनकी आज्ञा मानने और कुछ अिने-गिने लोगोंके हितमें रहनेके लिअे अिसलिअे मजबूर किया जाय कि अिस चीज पर अेक पुराने और सड़े-गले कानूनकी मुहर है। अुदाहरणके लिअे, कुछ जमींदार आपके पास आयें और जरूरतमन्द किसानोंको बांटनेके लिअे कुछ हजार अेकड़ जमीन आपको यह बतानेके लिअे दें कि अुनके हृदय बदल गये हैं — अिस बातकी प्रतीक्षा करनेके बजाय क्या यह ज्यादा आसान नहीं होगा कि पिछले पांच सालोंमें लाखों किसानोंने जिस लाखों अेकड़ जमीन पर मेहनत की है, जिन्दगी लगायी है और फसल पैदा की है, वह कानून बनाकर अुनको ही दे दी जाय? या यह होता रहे कि अेक ओर तो राज्यकी सेनायें हमारे किसानों पर गोलियां चलाती रहें, अुन्हें जमीनसे खदेड़ती रहें, और बरबाद करनेवाले लगान देनेको मजबूर करें, और दूसरी ओर आप अुन्हें बांटनेके लिअे भू-निधि अिकट्ठी करते हुअे घूमें? अिस प्रक्रियामें क्या तुक और तर्क हो सकता है?

मुझे खेद है कि मैंने अपनी बात सुनानेमें आपका बहुतसा वक्त ले लिया है। लेकिन मुझे लगा कि जब आपकी अूंचाअी और गौरवके व्यक्तिने तेलंगाना जाना और अिस समस्याका प्रत्यक्ष अध्ययन करना तय किया है, तो मैं भी आपके पास पहुंचूं और

www.vinoba.in

अिसको कोशिश करूं कि क्या अुस अुद्देश्यको हासिल करनेका, जो कि आपकी दृष्टिमें भी है, कोअी आसान और जल्दीका हल नहीं मिल सकता। और वह अुद्देश्य तो यही है कि तेलंगानामें शांतिकी परिस्थितियां अुत्पन्न की जायं, किसानोंको जमीन दी जाय, वहांकी जुल्मी जमींदारी प्रथाकी जगह अेक प्रगतिशील और सबको सुखकर व्यवस्था कायम की जाय, और अुन हजारों कम्युनिस्ट या गैर-कम्युनिस्ट लोगोंकी जान बचाअी जाय, जिन्हें हमेशा मृत्यु या कारावासका डर बना रहता है।

जेलमें बन्द जिन साथियोंसे आप मिले, अुनके सामने बड़ी बाधायें थीं, अिसीलिअे मैंने आपको लिखनेका निश्चय किया।

जैसा कि आपने हमारे साथियोंसे कहा था, 'परिवर्तन करने या परिवर्तित होने' के लिअे मैं आपसे जरूर खुद ही मिला होता। लेकिन बदकिस्मतीसे बम्बअी सरकारने मेरे खिलाफ अेक आरोप लगा रखा है, और यदि अदालतकी मदद न मिले तो सर्वव्यापी 'प्रतिबन्ध-कानून' (Detention Act) की मददसे वह मुझे जेलमें ठूंसनेकी राह देख रही है। अिसलिअे फिलहाल तो मैं आपसे मिलने और आपके सामने सारी बातें रखनेमें असमर्थ हूं।

लेकिन अगर आपको लगे कि मैं तेलंगानाकी समस्याका कोअी अैसा हल ढूंढ़नेमें, जिससे कि वहांकी जनताको शान्ति और सुख मिले, किसी तरहकी मदद कर सकता हूं, तो मैं अिस सेवाके लिअे तैयार हूं।

यदि आप जवाब देनेकी बात सोचें, तो अपना अुत्तर अूपरके पते पर भेज सकते हैं।

आपका,
श्री० अ० डांगे

(अंग्रेजीसे)

परंधाम, पवनार
ता० ११-७-'५१

श्री डांगे,

विशेष सावधानीके साथ भिजवाया हुआ आपका सविस्तर पत्र मुझे मिल गया है। पत्रकी ध्वनि मुझे भली लगी।

जमीनका प्रश्न हल होना चाहिये और अुसमें कानूनकी भी मदद मिलनी चाहिये, अिस पर कोअी बहस नहीं है। अिस विषय पर मैं जगह-जगह बोला भी हूं।

तेलंगानाके प्रश्नका सब पहलुओंसे जितना अभ्यास हो सका, मैंने किया है। और अिसकी भरसक सावधानी रखी है कि विचारके किसी पहलूकी अुपेक्षा न हो। मैं अिसी परिणाम पर आया हूं कि यह प्रश्न प्रेमसे, विश्वाससे और शांतिसे हल हो सकता है।

हिंसा और अहिंसाकी तात्त्विक चर्चामें मैं पड़ा नहीं और न पड़ना चाहता हूं। लेकिन रजाकारोंका जमाना बीतनेके बाद भी जिस तरहका हिंसाकांड तेलंगानामें चलाया जाता रहा, अुसका किसी भी तरह बचाव किया जा सकता है, अैसा मुझे नहीं लगता। अुसके पहले हुअी हिंसाका विचार मैं नहीं करता। लेकिन अुसके बाद जो हिंसा जारी रखी गअी, अुसमें मुझे बड़ा विचार-दोष नजर आता है।

मैं अिस निश्चित मत पर आया हूं कि हिन्दुस्तानकी कम्युनिस्ट पार्टीके लिअे रत्तीभर भी आनाकानी किये बिना अपनी मौजूदा नीति बदलना अत्यंत आवश्यक है। अुसमें गरीब जनताका भी हित है और कम्युनिज्मका भी।

जमीनका प्रश्न हल करनेमें मुझसे जितनी मदद बनेगी, अुतनी जो लोग अिस प्रश्नको हल करनेके लिअे व्याकुल हैं अुन्हें मिलेगी ही।

आपको भूमिगत रहना पड़ रहा है, अिसका मुझे दुःख है। मैं तो यह चाहता हूं कि सब लोग विशिष्ट सीमामें रहकर आजादीके साथ अपना काम कर सकें।

भेंटका सुयोग जब आयेगा, तब विस्तारपूर्वक चर्चा हो सकेगी।

(मराठीसे)

विनोबाके प्रणाम

www.vinoba.in

कोढ़-कामकी तालीम

वर्धाका महारोगी सेवा मंडल गांधी स्मारक निधिके आश्रयमें साधारण कार्यकर्ताओंके लिअे दत्तपुर कुष्ठ आश्रममें अेक तालीम केन्द्र शुरू करना चाहता है। अुन्हें अिस तरहसे तालीम दी जायगी कि वे — संभव हो तो डॉक्टरी मददसे — कोढ़ी बस्तीका संगठन और संचालन कर सकें। लेकिन अगर डॉक्टरोंकी मदद न मिल सके, तो भी तालीम पाये हुअे सामान्य कार्यकर्ताओंमें स्वीकृत पद्धतिके अनुसार बस्तियां चलानेकी योग्यता होनी चाहिये।

शिक्षा सम्बन्धी योग्यता: प्रवेश प्राप्त करनेके लिअे अुम्मीदवारको कमसे कम अिन्टर सायन्स पास होना चाहिये। भारतकी मान्य डॉक्टरी संस्थाके स्नातकों और मध्यप्रदेशके ग्राम्य मेडिकल प्रेक्टिशनरोंको पहले पसन्द किया जायगा। योग्य मामलोंमें महारोगी सेवा मंडलके संचालक बोर्ड द्वारा अिसमें अपवाद किये जा सकेंगे।

अुमर: अुम्मीदवारकी अुमर २१ से ४० के बीच होनी चाहिये। विशेष मामलोंमें अिस नियममें अपवाद किया जा सकेगा।

दूसरी शर्तें: अुम्मीदवारोंमें मानव-सेवाकी भावना, अीमानदारी और अिस तरहके कामकी सच्ची लगन होनी चाहिये। अुम्मीदवारोंमें कोअी लिंगभेद नहीं किया जायगा। लेकिन वे पूर्ण **स्वस्थ** होने चाहियें और अुनमें किसी भी नअी जगहमें यह काम शुरू करनेकी क्षमता होनी चाहिये।

तालीमका समय: १२ महीनेका होगा।

तालीमका स्थान: मुख्य तालीम दत्तपुर कुष्ठ आश्रममें दी जायगी।

शिक्षाका माध्यम: डॉक्टरी विषय अंग्रेजी माध्यम द्वारा पढ़ाये जायंगे। डॉक्टरीसे संबंध न रखनेवाले विषय हिन्दी या मराठी भाषामें पढ़ाये जायंगे।

परीक्षा और प्रमाण-पत्र: पाठ्यक्रम पूरा होने पर लिखित और व्यावहारिक परीक्षा होगी। परीक्षा पास होनेके लिअे ५० प्रतिशत नम्बर पाना जरूरी होगा। अुत्तीर्ण अुम्मीदवारोंको 'लेप्रॉसी ऑर्गेनाअिजर' का प्रमाण-पत्र दिया जायगा। जो अुम्मीदवार नियमित रूपसे वर्गमें अुपस्थित रहेंगे और सारी शर्तें पूरी करके शिक्षकोंको सन्तोष दिला सकेंगे, अुन्हींको परीक्षामें बैठनेकी अिजाजत दी जायगी।

रहने-खानेकी व्यवस्था: अभी १० से ज्यादा अुम्मीदवार भरती नहीं किये जायंगे। तालीमके लिअे चुने गये हर अुम्मीदवारको अुसकी व्यक्तिगत जरूरतके मुताबिक ५० से १०० रु० तक छात्रवृत्ति १२ महीने तक दी जायगी। रहनेकी व्यवस्था मुफ्त की जायगी। पहले महीनेका समय प्रयोगकाल माना जायगा। अितने समयमें अगर कोअी अुम्मीदवार तालीमसे लाभ अुठाने योग्य नहीं पाया गया, तो अुसे वापिस जाना होगा।

तालीमके बाद अुम्मीदवारको योग्यताके अनुसार १५० रु० माहवार पर ५ साल तक अपनी सेवायें देनेका वचन देना होगा।

अुम्मीदवार समाज-सेवाका काम करनेवाली किसी संस्थाके मार्फत आवेदन-पत्र भेजें तो ज्यादा अच्छा होगा। जो लोग स्वतंत्र रूपसे आवेदन-पत्र भेजें, अुन्हें अपने कामके बारेमें अैसी जानकारी देनी होगी, जिससे संचालक बोर्डको यह विश्वास हो सके कि वे अपने पांवों पर खड़े रहकर कुष्ठ-निवारणका काम शुरू कर सकते हैं।

अिस विषयका सारा पत्रव्यवहार नीचेके पते पर किया जाय। मंत्रीकी लेखी अिजाजत प्राप्त किये बिना कोअी दत्तपुर न आवे।

दत्तपुर कुष्ठ आश्रम,
नालवाड़ी, वर्धा
७-६-'५१

मंत्री
महारोगी सेवा मंडल

हरिजनसेवक
१८ अगस्त १९५१

साम्यवादके बारेमें

अिस अंकमें दूसरी जगह भारतीय साम्यवादी दलके नेता श्री श्री० अ० डांगे और श्री विनोबाका पत्रव्यवहार प्रकाशित हो रहा है। मैं पाठकोंसे अनुरोध करता हूं कि वे अुसे ध्यानसे पढ़ें। वह कअी दृष्टियोंसे विचारणीय है। यहां मैं अुसके अेक पहलूका विचार करता हूं।

आजकल, खासकर पश्चिममें अेक अैसी मनोवृत्ति बन गअी है, मानो साम्यवाद और साम्यवादी कोअी अस्पृश्य-सी चीज हैं, और अुनको हमें अपने पास फटकने भी नहीं देना चाहिये। तो अेक छिपकर रहनेवाला साम्यवादी नेता साहस और विश्वासके साथ श्री विनोबा जैसे व्यक्तिको, जिनका वह सरकार बड़ा आदर करती है जो साम्यवादियोंको अपना शत्रु मानती है और जो साम्यवादियोंकी निगाहमें अुनका दमन करती है, पत्र लिखता है और विनोबा भी अुसे अुतनी ही मित्रताके साथ जवाब देते हैं। यह बात अुन राजकीय नेताओं और देशोंको, जो राजनैतिक विचारोंमें द्वेषकी सीमाको पहुंचा हुआ मतभेद रखते हैं, अजीब-सी मालूम होगी। अधिकांश देशोंमें, जब कोअी देश किसी दूसरे देशके खिलाफ युद्ध छेड़ता है, तो दोनों देशोंकी जनताको यह सिखाया जाता है कि वे शत्रु-देशके हरअेक नागरिकको अपना निजी शत्रु मानें और अुसे पकड़कर अधिकारियोंको सौंप देना या अुसे अेकदम मार डालना अपना कर्तव्य समझें। युद्ध न हो रहा हो, सिर्फ सम्बन्ध बहुत खिंच गये हों, तब भी अुनके आपसी मनोभाव अन्ध असहिष्णुताके होते हैं। पश्चिमके या पश्चिमसे प्रभावित देशोंके लोग आजकल दूसरोंके धर्मके विषयमें काफी अुदार या अुपेक्षाकी वृत्तिवाले हो गये हैं। लेकिन असहिष्णुताकी अुनकी पुरानी परम्परा, जिसके कारण अीसाके बाद कोअी सत्रह सौ वर्ष तक यहूदी, अीसाअी और मुसलमान पैगम्बरों तथा सन्तों पर और बादमें अुन धर्मोंमें पैदा हुअे सुधारकों या अश्रद्धालुओं पर अत्याचार होते रहे, और कभी-कभी तो प्राणदण्ड भी दिया जाता रहा, आज भी चल रही है। लोकराज्यों और साम्यवादी देशोंमें जो आपसी तनाजा है, अुसमें वही चीज दिखाअी पड़ती है। जिस तरह किसी समय रोमन कैथालिकोंके देशमें प्रोटेस्टेंट होना या प्रोटेस्टेंटोंके देशमें रोमन कैथालिक होना मुश्किल होता था, अुसी तरह आज किसी जनतंत्रवादीका रूसमें आजादीसे घूमना-फिरना या किसी साम्यवादीका अमेरिकामें रहना मुश्किल है।

कुछ ही महीने पहले हमने अखबारोंमें पढ़ा था कि अमेरिकामें डॉ० भारतन् कुमारप्पा पर यह संदेह किया गया है कि वे साम्यवादसे सहानुभूति रखते हैं, और अिसलिअे अुनके भाषणोंका कार्यक्रम अेकाअेक रोक दिया गया। जिन संस्थाओंने श्री भारतन्को निमंत्रित किया था, वे अुनके किन विचारोंसे नाराज हो गअीं, अिसका विवरण श्री भारतन्के शब्दोंमें ही सुनिये:

> "साम्यवादके बारेमें मैंने स्पष्ट कर दिया था कि हम लोग हिंसा और किसी भी तरहके तानाशाही राजतंत्रके खिलाफ हैं। लेकिन मैंने कहा कि अुसका लक्ष्य, यानी अैसी समाज-व्यवस्थाकी स्थापना जिसमें कोअी शोषण नहीं होगा और समृद्धताकी सुख-सुविधायें जनताके दुःखी और दलित वर्गको भी मयस्सर होंगी, हमें भाता है; और अिसका कारण यह है कि हमारी जनताका अधिकांश बहुत ही दरिद्र है। यह अेक दुर्भाग्य है कि साम्यवाद यह लक्ष्य अनैतिक और अेकदम हिंसक साधनोंके द्वारा हासिल करना चाहता है। अिसलिअे मैंने कहा कि अगर भारतने साम्यवादियोंके लक्ष्यको स्वीकार किया, तो अुसे भिन्न मार्गका, गांधीजी द्वारा सिखाये सत्य और अहिंसाके मार्गका, अवलम्बन करना होगा।
>
> "मैंने अुन्हें बताया कि साम्यवादियोंके प्रति भारतके और अमेरिकाके रुखमें यहां अेक बुनियादी भेद है। हम लोगोंकी रायमें साम्यवाद अेक विचार है; जिसका विकास हरअेक देश अपने स्वभावके अनुसार कर सकता है। अुसके लिअे यह जरूरी नहीं है कि वह रूसी पद्धतिका ही अनुकरण करे; मुमकिन तो यह भी है कि अिसमें अुसे रूसका विरोध भी करना पड़े, जैसा कि युगोस्लावियामें हुआ है। लेकिन अमेरिका तो साम्यवादको रूसी साम्राज्यवादके सिवा और कुछ मानता ही नहीं। चूंकि हम साम्यवादको अेक अैसी चीज मानते हैं, जिसे हम मनचाहा गढ़ सकते हैं, अिसलिअे साम्यवाद हमें अुतना डरावना नहीं मालूम होता जितना कि साम्राज्यवाद। सच तो यह है कि अुसमें हमारी जनताके विशाल समुदायोंके लिअे नयी आशा और नये जीवनका आकर्षण होना भी सम्भव है। लेकिन यदि अैसा नहीं हुआ और साम्यवाद हमारे यहां रूसी साम्राज्यवादके रूपमें आया, तो मेरा दृढ़ मत है कि वह अेशियामें ज्यादा दिन नहीं टिकेगा। अेशियामें आज सर्वत्र राष्ट्रीयताकी ज्वाला सुलग रही है, और वह किसी भी विदेशी सत्ताका फरमां-बरदार होना पसन्द नहीं करेगा। चीन और भारत दोनों विशालकाय देश हैं, अुनकी अति प्राचीन परम्परायें हैं, और आज अुनमें नया जीवन लहरें मार रहा है। अिसलिअे यह सम्भव नहीं है कि रूस अुन्हें निगल ले, जैसा कि पिछले युद्धके बाद अुसने यूरोपके कुछ छोटे-छोटे देशोंको निगल लिया है। हम लोग अपनी राष्ट्रीय आजादीकी रक्षा प्राणपणसे करनेके लिअे कटिबद्ध हैं। मैंने कहा कि जिसे यह डर लगता हो कि रूसी साम्राज्यवादके रूपका साम्यवाद कहीं भारतमें न फैल जाय, अुसे यह बात याद रखनी चाहिये।"

लेकिन साम्यवादके प्रति अिस असंकुचित और सहिष्णु मनोभावको अमेरिका जैसा स्वतंत्रताका अनुरागी और लोकराज्यका हामी देश भी सह नहीं सकता!

यह भारतकी प्रणालिका नहीं है। यहां तक कि भारतवासी मुसलमान भी, जो अपनी पुरानी परम्पराके कारण हिन्दुओं और पारसियोंकी अपेक्षा साधारणतः ज्यादा कट्टर और असहिष्णु रहे हैं, भारतीय प्रभावमें आकर अपनी मतान्धतासे अूपर अुठने लगे थे। और हिन्दुओंने तो अिस दोषको अपने जीवनसे अितना पहले दूर कर दिया था कि किसी बीते हुअे युगमें हमें अुसके रहनेके चिन्ह प्रह्लाद और सुधन्वाकी पौराणिक कहानियोंमें ही मिलते हैं। हिन्दुओंके अितिहासमें सुधारकोंकी — जिनमें कुछ तो अेकदम क्रान्तिकारी थे — अेक अटूट परंपरा चली आयी है। अिसमें अुन्हें कुछ सामाजिक विरोध और जुल्म जरूर सहना पड़ा। लेकिन सुधारकोंको दूसरे देशोंमें जो जुल्म सहने पड़े हैं, अुनके मुकाबलेमें वह कुछ नहीं था। अगर ब्रिटिश साम्राज्यवादने बीचमें आकर भारतकी मुख्य धर्म-जातियोंमें धर्मान्धताकी आग फिरसे न सुलगायी होती, जिसके फलस्वरूप पिछले कुछ वर्षोंसे हिन्दुओंके अुदार और सहिष्णु जीवनमें भी अेक प्रतिगामी पुनरुद्धार (revivalism) की प्रवृत्ति अुठ खड़ी हुअी है, तो यह मानना भी कठिन हो जाता कि प्रह्लादकी कहानी वास्तविक जीवनमें कभी घटित हो सकती है। जहां तक मैं जानता हूं, भारतके अितिहासमें गांधीजीका ही अैसा पहला

www.vinoba.in

अुदाहरण है, जिसमें बुद्ध और महावीरकी अूंचाअीका महात्मा अपने ही स्वधर्मियों द्वारा अिसलिअे मार डाला गया कि वह अुनकी तरह धर्मान्ध, पुराण मतवादी और संकुचित साम्प्रदायिक नहीं था।

विभिन्न राजनैतिक पक्षों और अुनके अुसूलोंके प्रति भी भारतीय मनोभाव अुतना ही अुदार है। 'साम्यवादी' शब्द सुनकर या 'साम्यवादी' को देखकर हमारे मनमें अेकदम कोअी घृणाका भाव नहीं आता। और यदि साम्यवादी न्याय्य मानव-समाजके अपने बुनियादी विचारों पर अमल करनेमें या अुनका प्रचार करनेमें गुप्त, हिंसक और वंचक अुपायोंका आश्रय न लें, तो अुन्हें भी अपना काम करने और साम्यवादी ढंगके जीवनका प्रयोग करनेकी वही आजादी और रक्षण मिलेगा, जो कि किसी दूसरे राजनैतिक, धार्मिक या सामाजिक संगठनको मिलता है।

अिसका अर्थ यह नहीं है कि सर्वोदय और साम्यवादमें कोअी महत्त्वके फर्क नहीं हैं। जैसा कि विनोबाजीने अन्यत्र कहा है, साम्यवादका असली प्रतिपक्षी लोकतंत्रके बानेमें छिपकर चलनेवाला पूंजीवाद नहीं है, बल्कि गांधीजीका 'सर्वोदय' है। यदि गांधीजीका जीवन और अुनके जीवन-व्यापी प्रयोग व्यर्थ नहीं हो गये हैं, तो सर्वोदय ही अैसा है जो अेक ओर साम्यवाद और दूसरी ओर पूंजीवाद दोनोंको परास्त करनेवाला है। और अिसी तरह भारत और पाकिस्तानकी आपसी शत्रुताका अन्त भी अुसीसे होनेवाला है। सैनिक तैयारियां, अेटम और हाअिड्रोजन बम, भड़कीला प्रचार, और अेक-दूसरेको लगातार साशंक रखनेकी कोशिशोंसे साम्यवाद या पूंजीवादका अन्त नहीं होनेवाला है; और न दोनोंका मेल करनेकी 'यूनो' की कोशिश ही तब तक सफल होनेवाली है, जब तक कि अुसकी आखिरी शक्ति अेक या अनेक देशोंका सामूहिक सैनिक-बल है। अिसका परिणाम तो यही हो सकता है कि बीच-बीचमें विरामकी सन्धि हो जाया करे और लगातार युद्ध होते रहें। लेकिन निःशस्त्र सर्वोदयकी यह महिमा है कि वह साम्यवाद, पूंजीवाद और सम्प्रदायवाद, आदि अपने सब सशस्त्र प्रतियोगियोंके साथ निःशंक मैत्रीपूर्वक मिल सकता है, अुनकी सुन सकता है और अपनी कह सकता है। यह सर्वोदयकी ही खूबी है।

'आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुः आत्मैव रिपुरात्मनः' (आत्मा ही अपना मित्र और शत्रु है), यह गीताका वचन है। अिसलिअे सर्वोदयमें हम न सिर्फ 'प्यारे मित्र'का ही, बल्कि 'प्यारे शत्रु'का भी सम्बोधन कर सकते हैं। और विनोबाके द्वारा सर्वोदयने अपने अिस प्रिय शत्रु साम्यवादसे अपने व्यवहार पर पुनर्विचार करनेके लिअे, अहिंसाके शान्तिमय अुपायोंके सामने सच्चा और पूरा समर्पण करनेके लिअे और अिस तरह साम्यवादके लक्ष्यसे भी जो ज्यादा गहरी और पूर्ण है, अुस जड़मूलकी क्रान्तिको सिद्ध करनेके लिअे आमंत्रण दिया है।

मैं आशा करता हूं कि यह आमंत्रण व्यर्थ नहीं जायगा।

वर्धा, ६-८-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

अभिनन्दन

कांग्रेसके महामंत्रीने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके बंगलौर अधिवेशनमें ता० १५-७-'५१ को पास किया गया यह प्रस्ताव भेजा है:

"यह सभा आचार्य विनोबा भावेकी, महात्मा गांधीकी विशुद्ध भावनाके अनुसार की गयी, हैदराबाद राज्यके तेलंगाना प्रान्तकी यात्राकी गंहरी कद्र करती है। आचार्यजी अपने साथ अहिंसाका पावन संदेश ले गये, और अुन्होंने अुस हिंसा और द्वेषका शमन करनेमें बड़ी मदद पहुंचायी, जिसने कि अुस अुत्पीड़ित प्रान्तको त्रस्त कर रखा है।"

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

'पहली पंचवर्षीय योजना' पर टीका—२

अुद्योग

बड़े अुद्योगोंके क्षेत्रमें वैयक्तिक साहसको प्रायः पूरी छूट दी गयी है; यहां तक कि अुनकी जो योजना यहां दी गयी है, अुसमें विदेशी व्यापारियों या व्यापारिक कम्पनियों तकको यहां आकर काम करनेका बुलावा दिया गया है। यह नीति खतरनाक है। अेक बार जहां विदेशी 'निहित स्वार्थों' (vested interests) का पांव हमारे यहां जम गया कि फिर अुन्हें हटाना लगभग असम्भव हो जायगा। विदेशी कर्जको जो प्रोत्साहन मिल रहा है, वह विदेशी साम्राज्यवादके प्रवेशके लिअे हमारा दरवाजा खोल रहा है। विदेशी पूंजीको देशी व्यापारियोंके साथ साझा कर सकनेकी जो सुविधा दी गअी है, वह भी खतरेसे भरपूर है। कहा गया है कि दियासलाअीके अुत्पादनमें हम काफी आगे बढ़ गये हैं। जाहिर है कि कहनेवाले यह भूल गये हैं कि अिस व्यापारका अधिकांश 'विमको' के हाथमें है; यह 'विमको' दर असल अेक विदेशी अिजारेदारी (monopoly) है, और वह अिस दिशामें देशी अुद्योगको कुचलनेके लिअे तरह-तरहके अुपाय करती है।

सरकार कृत्रिम खादकी फैक्ट्रियोंके विकासमें जो मदद कर रही है, अुसे भी हम असन्तोषकी दृष्टिसे देखते हैं। अिन रासायनिक खादोंका अुचित अुपयोग हो, अिसकी पहली शर्त यह है कि हमारे पास काफी बड़ी संख्यामें जमीनके जानकार रसायनशास्त्री होने चाहियें, जो प्रत्येक जमीनकी जांच करें और बतायें कि अुसमें कितनी खाद देनी होगी। अैसी सावधानी रखे बिना रासायनिक खादोंका अन्धाधुंध अुपयोग हमारी अुपजाअू जमीनको बरबाद कर देगा और हमें भयंकर आपत्तिके घाट पर ला पटकेगा।

योजना-कमिशनने शक्कर, चावल और वनस्पतिकी मिलोंके साथ रियायतका बर्ताव किया है। ये कारखाने आहारकी वस्तुओंका नाश करते हैं। अिसलिअे, खासकर आजकी परिस्थितियोंमें, अुम्मीद तो यह थी कि अुनकी बुराअियोंका अिजहार होगा, और जरूरी हो तो अुन्हें बन्द भी किया जायगा। जनताके स्वास्थ्य और अुचित आहारके लिहाजसे भी कमिशनको चाहिये था कि वह अुनके प्रति कोअी दूसरी नीति अख्तियार करता। लेकिन स्पष्ट है कि वह अिन व्यापारोंमें जिनका स्वार्थ है, अुनका मुकाबला करनेके लिअे तैयार नहीं है। अिसी सिलसिलेमें यह भी कहना जरूरी है कि खाद्य-वस्तुओं और दवाअियोंके विज्ञापनों पर सरकारी सहमति और लायसेन्सका नियंत्रण होना चाहिये।

कमिशनने गृह-अुद्योगोंके विकासका समर्थन तो किया है, लेकिन अुसके लिअे स्थानीय आयात पर किसी प्रतिबन्धका लगाना जरूरी नहीं माना है। हमारा खयाल तो यह है कि स्थानीय मांग पैदा करनेके लिअे यह जरूरी हो जाता है कि बाहरका आयात रोका जाय। गांववालोंके साधनोंमें भी किफायतशारी जरूरी है, ताकि वे अपनी प्राप्त आयका अुपयोग स्थानीय अुत्पादनके काममें कर सकें। अुन्हें बाहरके प्रलोभनोंसे बचाना चाहिये। अगर हम ग्रामोद्योगोंको पुनः संजीवित करना चाहते हैं, तो हमें स्वदेशीकी दृढ़ भावना पैदा करनी होगी।

ग्राम-केन्द्रित अुत्पादनको बढ़ाने और अुसकी मदद करनेके लिअे कमिशनने सरकारी खरीद-नीतिकी हिमायत की है, यह बहुत अुचित है।

गांवके कारीगरोंकी अेक मुख्य दिक्कत यह है कि अुनके अुद्योगोंके कच्चे मालका नीलाम होता है। अुदाहरणके लिअे, नदियोंके किनारे होनेवाला वह विशेष घास, जिसकी चटाअियां बनती हैं, सरकार छोटी-सी आयके लोभमें नीलामसे बेच देती है, जिसका फल यह होता है कि चटाअियोंका स्थानीय अुद्योग नष्ट हो जाता

है और जापानी चटाओ-अुद्योग बढ़ता है। अिसी तरह कुम्हारको जो मिट्टी चाहिये, वह भी किसी सरकारी ठेकेदारसे खरीदनी पड़ती है, और वह अुस पर मुनाफा कमाता है। यह कुम्हारके बरतन-अुद्योगकी अेक बड़ी बाधा है। फिर तरह-तरहके छोटे कर और महसूल हैं, जो मालके यातायातमें मुश्किलें पैदा करते हैं। गृह-अुद्योगोंके रास्तेमें आनेवाली अिन बाधाओं पर योजनामें पूरा विचार नहीं हुआ है।

घर-निर्माणके सवालका विचार सिर्फ औद्योगिक केन्द्रोंको ही ध्यानमें रखकर किया गया है। लेकिन अिन केन्द्रोंमें घर-निर्माणकी जिम्मेदारी तो अिन अुद्योगोंकी ही है। सरकारको अुस पर नियंत्रण भर रखना चाहिये। सरकार बड़े अुद्योगोंको जो कअी तरहकी अदृश्य सहायता करती रहती है, यह अुसका अेक और अुदाहरण है।

शिक्षा

शिक्षा-प्रणालीका विचार करते हुअे रिपोर्टने अेक ही सांसमें सीधे-अुलटे विधान किये हैं। सही शिक्षा-प्रणाली क्या होगी, अिस बारेमें अुसको कोअी निश्चित नीति या सिद्धान्त नहीं है। और सब कामोंमें कोअी निश्चित नीति हो या न हो, पर शिक्षाकी तो निश्चित नीति होनी ही चाहिये और अुससे यह प्रगट होना चाहिये कि हम राष्ट्रको विकासकी किस राह पर चलाना चाहते हैं। अिस अध्यायमें गांधी-पद्धतिकी बुनियादी शिक्षा, मैकॉलेकी बदनाम पद्धतिकी माध्यमिक शिक्षा, और साम्राज्यवादी पद्धतिकी विश्वविद्यालयीन शिक्षा, सबका अेक-सा समावेश हुआ है! सबकी निष्पक्ष सिफारिश हुअी है! मसौदेमें सुझायी गअी बहुतसी योजनाओंमें विचारकी अेकसूत्रता नहीं है, अुसका यह अेक अुदाहरण है।

राजतंत्र

प्रत्येक राष्ट्र, राष्ट्रीय जीवनके अनुकूल, अपने लिअे अेक विशेष राजतंत्रका विकास करता है। ब्रिटेन अपनी मुख्य आवश्यकताओंके लिअे अपने अुपनिवेशों और दूसरे दूर देशों पर निर्भर है। वह अेक साम्राज्यवादी देश है। अिसलिअे अुसे अपने मंत्रि-मंडलमें 'रक्षा', 'अर्थ' और 'विदेश नीति'को मुख्य स्थान देना जरूरी हुआ है। हमने भी अिसी व्यवस्थाका अन्धानुकरण किया है। यह नीति खतरनाक है। वह हमें साम्राज्यवादियोंके रास्ते पर ले जा सकती है। अितिहासमें अैसे देशोंके अनेक अुदाहरण मिलेंगे, जिन्होंने 'सेना'को अतिशय महत्त्व दिया, और अिसलिअे जिनकी बड़ी दुर्गति हुअी; क्योंकि सेनाकी यह अनिवार्य प्रवृत्ति होती है कि वह खुद शासक-वर्गका रूप ले लेती है। हमें अपनी वर्तमान व्यवस्थाके अिस अन्तर्हित खतरेसे सावधान रहना चाहिये। हमारा देश खेती-प्रधान है और अुसके मंत्रि-मंडलकी रचनामें हमारे शांति-वादी अिरादोंका दर्शन होना चाहिये। अिसका यह अर्थ नहीं कि 'रक्षा' का विभाग होना ही नहीं चाहिये। हमारा मतलब अितना ही है कि वह पुलिसकी ही तरह अेक गौण विभाग होना चाहिये, और अुसके अधिकारीको मंत्रि-मंडलकी सदस्यताका दर्जा नहीं मिलना चाहिये। 'अर्थ' और 'विदेश नीति' के विषयमें भी अैसा ही होना चाहिये। अिस योजनामें हमारे राजनैतिक तंत्रमें किस विभागको कितना महत्त्व देना चाहिये, अिसका क्रम भी बताया जाना चाहिये।

अैसा किया जाय तो मंत्रि-मंडलके सब विभाग अपने-अपने कामके महत्त्वके अनुसार अपना योग्य स्थान ले लेंगे, और अुनके महकमोंका संगठन अैसा होगा कि सब अपना-अपना काम बखूबी करेंगे और कोअी किसीके रास्तेमें आकर अड़चन पैदा नहीं करेगा।

सामान्य

अिस कच्ची रूपरेखाके आरम्भिक हिस्सेमें विषयका स्पष्ट प्रतिपादन नहीं है, कोरा किताबी ज्ञान और शब्दजाल ही ज्यादा है। अेक सरकारी दस्तावेजमें स्पष्टता और अर्थघनताके गुणोंकी आशा की जाती है। योजनामें खुद अेक बड़ा दोष है। अुसमें किसी निश्चित जीवन-दृष्टिका अभाव है। अिसका परिणाम यह हुआ है कि पूरी योजनामें शुरूसे आखिर तक कोअी अेक नीति नहीं मिलती। अधिकतर तो 'कहींकी अींट, कहींका रोड़ा' वाली हालत हुअी है। अिसके अलावा, अुसमें जीवनकी कलाके साथ अुसे सुसंगत बनानेके लिअे कोअी दृष्टि भी नहीं है। पूरी योजनाका सार यों है कि अुसमें व्यक्तिगत-मालिकीके बड़े अुद्योगोंकी तरफदारी हुअी है। संक्षेपमें हम कह सकते हैं कि योजनाके कुछ कुछ भाग अच्छे हैं।

(अंग्रेजीसे) जो० कॉ० कुमारप्पा

अुच्च शिक्षाका माध्यम

[बम्बअी सरकारके मुख्य मंत्रीके अेक सामान्य अिशारेसे हमें मालूम हुआ है कि कॉलेजके शिक्षणमें माध्यमके नाते हिन्दीका अुपयोग करनेके बारेमें सरकार बम्बअी राज्यकी अलग-अलग युनिवर्सिटियोंकी सलाह ले रही है। गुजरात युनिवर्सिटीके वाअिस-चान्सलरके अिसी आशयके अेक कथनसे अिस बातका समर्थन होता है। वे बताते हैं कि सरकारने माध्यमके तौर पर हिन्दीका अुपयोग करनेकी सूचना की है। मैं नहीं मान सकता कि सरकार गुजरातीको अेक ओर रखकर हिन्दीको माध्यम बनानेकी सूचना करने जैसी गंभीर भूल करेगी। राष्ट्रभाषाके नाते हिन्दीका अुपयोग करना और अुसका ज्ञान होना तथा हिन्दीको शिक्षाका माध्यम बनाना, दोनों बिलकुल भिन्न बातें हैं। अिस सारे सवाल पर विभिन्न दृष्टियोंसे गंभीर विचार करना जरूरी है। गुजरात युनिवर्सिटी कमेटीकी रिपोर्ट (१९४८-४९) के साथ जोड़ी हुअी मेरी विरोध-टिप्पणीमें पेश किये हुअे अपने कुछ मन्तव्य (पैरा १९० से आगे) मैं नीचे देता हूं। आज यह प्रश्न अुठा है, अिसलिअे अुसके सम्बन्धमें अपने विचार यहां फिरसे अुद्धृत करनेके लिअे पाठक मुझे क्षमा करेंगे। —म० देसाअी]

यह ध्यान देने लायक बात है कि शिक्षाके माध्यमका प्रश्न हिन्दुस्तानमें आधुनिक शिक्षाके प्रश्नकी खास अुलझन बना हुआ है। सन् १८३५ में यह शिक्षा शुरू हुअी, तभीसे यह प्रश्न सरकारी और गैरसरकारी मंडलोंके समर्थ और बड़े विचारकोंके मनको निरन्तर मथता रहा है। आज हम देखते हैं कि यह प्रश्न सबसे आगे आ गया है। शायद १८३५ का अरसा अिसका अपवाद माना जा सकता है। फर्क अितना ही है कि १८३५ में अिस प्रश्नके मुद्दों पर निर्णय करनेकी जिम्मेदारी विदेशियों पर थी, जब कि आज स्वतंत्र प्रजाके नाते हमें ही अिसका निर्णय करना है। आज हम जो निर्णय करेंगे, वह ज्यादा नहीं तो अुस समय जितना ही महत्त्वपूर्ण और युगप्रवर्तक सिद्ध होगा।

शिक्षाका सच्चा माध्यम बालककी भाषा ही हो सकती है, यह सिद्धान्त सब जगह स्वीकार किया गया है। अिसके बारेमें कोअी प्रश्न ही खड़ा नहीं होना चाहिये। लेकिन दुःखकी बात है कि शिक्षाके अिस निश्चित और ठोस सिद्धान्तको अेक तरफ रखकर अेक पक्ष यह हिमायत करता है कि अुच्च शिक्षाका माध्यम राष्ट्रभाषा या संघभाषा होनी चाहिये। सन् १८३५ में देशके सामने जैसी परिस्थिति खड़ी हुअी थी (अंग्रेजी बनाम देशी भाषायें), लगभग वैसी ही परिस्थिति अब भी खड़ी हुअी है; और हिन्दुस्तानी बनाम प्रान्तीय भाषाओंके बीच चुनाव करनेकी बात हमारे सामने खड़ी की गअी है। सारे हिन्दुस्तानमें अूंचे वर्गोंके लिअे सार्वत्रिक राजमान्य माध्यमके रूपमें काम देनेवाली अंग्रेजी भाषाकी शंकास्पद तुलनाके आधार पर अिस विचारधाराके लोग मुख्यतः भारतकी अेकताके नाम पर यह दलील करते हैं।

बेशक प्रान्तवाद बुरी चीज है। लेकिन क्या यह दलील की जा सकती है कि वह वाद प्रान्तीय भाषाओंके कारण पैदा होता

www.vinoba.in

है? हरगिज नहीं। आज हमारे पास अंग्रेजीके सामान्य माध्यमके होते हुअे भी क्या यह बात मौजूद नहीं है? यह तो तय है कि युनिवर्सिटीके पास शिक्षाका कोअी माध्यम होना चाहिये। और यदि यह निश्चित सिद्धान्त हो कि वह माध्यम मातृभाषा ही होनी चाहिये, तो फिर अीमानदारीकी तरह यही सबसे अच्छी नीति और सबसे निश्चित मार्ग कहा जा सकता है। राष्ट्र या जनतासे संबंध रखनेवाली बातोंमें अुसका भविष्य सत्यके हाथमें सौंपना चाहिये, न कि अुसके अूपरसे वास्तविक दिखाअी देनेवाले झूठे रूपोंके हाथमें। यही हमेशा अुत्तम नीति और सच्ची बुद्धिमानी है।

पहले तो अुच्च शिक्षाके लिअे माध्यम तय करनेका सवाल केवल अंग्रेजीकी जगह दूसरी भाषा खोज निकालनेका सवाल नहीं है, ताकि वह दूसरी भाषा जैसे अब तक अंग्रेजी करती आअी है वैसे विविध प्रान्तीय भाषाओं पर हावी हो जाय। यह नअी हावी हो बैठनेवाली भाषा अखिल भारतकी सर्वमान्य भाषा हो, तो अिससे अुसका स्वभाव कोअी बदल नहीं जाता। अुसी तरह, अिससे गुजरातीका, जिसका दावा सब तरफसे स्वीकार किया गया है, स्थान हजम कर लेनेके अखिल भारतकी सर्वसामान्य भाषाके मूलतः झूठे दावेमें भी कोअी फर्क नहीं पड़ता।

दूसरी अेक बातका भी ध्यान रखना चाहिये। किसी प्रजाके लोकशाही और संस्कृतिके विकासके अितिहास पर हम निगाह डालेंगे, तो पता चलेगा कि अूंचे वर्गोंकी अर्थात् अूपरी सिरेके लोगोंकी भाषा, जो प्रादेशिक देशी भाषाओं पर अपना प्रभुत्व रखती थी, का स्थान प्रादेशिक भाषायें लेती हैं; और समय बीतने पर ये प्रादेशिक भाषायें अुतनी ही प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेती हैं। युरोपमें पुनरुत्थान और सुधार-युगके बादकी सदियोंमें लेटिनकी जगह युरोपीय भाषाओंने ले ली, और वे ही आज अपने-अपने प्रदेशकी युनिवर्सिटियोंकी माध्यम बनी हुअी हैं। साधारण आदमीको अूंचे वर्गोंके साथ समाज-जीवनमें जो हिस्सा लेना है, अुसे जानने और करनेकी आवश्यकता ही अिस क्रान्तिकारी घटनाका कारण बनी है। संस्कृतके खिलाफ पाली, प्राकृत और 'भाखा' के आन्दोलनको भी देखिये। पिछली ६ या ७ सदियोंके अरसेमें विकसित बारह-पन्द्रह भारतीय भाषायें, जिनका व्यवहार देशके कुछ हजार नहीं, बल्कि करोड़ों लोग करते हैं, अिसी अैतिहासिक प्रक्रियामें से जनमी है। फारसी और अंग्रेजी भाषाके प्रभुत्वके बुरेसे बुरे दिनोंमें भी वे सब टिकी रहीं। सच पूछा जाय तो अिन दोनों भाषाओंका प्रभुत्व होते हुअे भी अुन्होंने अिनसे जरूरी पोषण लेकर और समृद्ध बनकर अपनी जीवनशक्ति सिद्ध कर दिखाअी है।

लेकिन कुछ लोग अैसे भी हैं, जो राष्ट्रभाषाको माध्यम बनानेके अुत्साहमें बहकर यहां तक कहने लगे हैं कि अैसा करनेमें प्रान्तीय भाषायें अन्तमें लुप्त भी हो जायं तो कोअी परवाह नहीं। यह हमारी खुशकिस्मती है कि सच्ची राष्ट्रीयता हमसे यह भोग मांगती ही नहीं। जैसा कि हम अूपर देख चुके हैं, अिन भाषाओंके विकासको रोका नहीं जा सकता। और यह केवल संभव ही नहीं, बल्कि हितकर और आवश्यक भी है कि वे सब हिन्दुस्तानीके साथ अपनेको भी अेक राष्ट्रीय तानेबानेमें ओतप्रोत कर लें। अपने गलत निर्णयके कारण हमारी भाषाओंके बीच पारिवारिक कलह खड़ा नहीं करना चाहिये। फिर भी यदि राष्ट्रभाषाका दुरुपयोग करके अंग्रेजीकी जगह अुसे कायम किया जायगा, तो निश्चित है कि प्रादेशिक भाषायें आजकी अविकसित हालतमें बनी रहेंगी और युनिवर्सिटीके स्तर तक नहीं पहुंच सकेंगी — जिस स्तर तक पहुंचनेका अुनका न्यायसंगत दावा और जन्मसिद्ध अधिकार है। क्योंकि अगर हम अपनी सारी पढ़ाअी, शिक्षण और शोधकार्यके माध्यमके रूपमें अुनका अुपयोग न करें, तो निश्चित है कि वे अुस हद तक अविकसित ही रहेंगी। मैंने अूपर बतानेका प्रयत्न किया है, अुसके मुताबिक यदि सचमुच अैसा हुआ, तो यह बड़े संकटकी बात होगी और अुससे लोकशाही और शिक्षाका विकास जरूर रुकेगा।

अिसके अलावा, अिससे हिन्दुस्तानी और अिन भाषाओंके बीच अैसा तनाव पैदा होगा, जो सचमुच बड़ा खतरनाक साबित होगा। दरअसल यह तनाव और खींचतान संकुचित प्रान्तवादको अुत्तेजन देगी, जिसका माध्यमके रूपमें राष्ट्रभाषाकी हिमायत करनेवालोंको खुद ही अितना बड़ा डर है।

स्वीकार करनेके लिअे सर्वमान्य जैसी कोअी राष्ट्रभाषा तैयार ही होती, तब तो हिन्दुस्तानीको माध्यम बनवानेवालोंकी बात समझी भी जा सकती थी। लेकिन दरअसल हालत यह है कि हमारे राष्ट्रीयत्वके साथ-साथ हमारी राष्ट्रभाषाको भी अभी विकास करना है। राष्ट्रभाषा तो हमारी राष्ट्रीय अेकताका प्रतीक — खुद अुसका आविष्कार ही बननेवाली है। परन्तु अिस बारेमें भी संस्कृतमयी हिन्दी तथा हिन्दुत्वकी भावनाके पुनरुद्धारके संकुचित विचारसे अपने संकुचित मूल्य स्थापित करने और सच्ची राष्ट्रीय प्रगतिको रोकनेका प्रयत्न किया जाता है।

प्रान्तीय भाषायें अैसे विचारसे मुक्त हैं। अलबत्ता, यह सच है कि वे पूरी तरह विकसित नहीं हैं। परन्तु यह हालत तो आज हिन्दीकी भी है। परन्तु अिन सब भाषाओंका अेक लक्षण यह है कि अुनका किसी अेक भाषाके विरुद्ध प्रतियोगिताका दावा नहीं है; और अुनमें से हरअेक अपने ढंगसे सबके संयुक्त और सामान्य प्रयत्नसे युनिवर्सिटीके स्तर तक पहुंचनेके लिअे तैयार है। राष्ट्रभाषाको अगर कुछ करना ही हो, तो अुसे अिस संयुक्त प्रयत्नमें पूरकका स्थान लेना चाहिये; अुसे प्रान्तीय भाषाओंके साथ संघर्ष नहीं करना चाहिये या अुनसे होड़ नहीं लगानी चाहिये।

अिस जगह यह याद रखना चाहिये कि राष्ट्रभाषाके आन्दोलनकी बुनियाद समस्त देशके लोगोंको दिये गये अिस वचनमें है कि हिन्दुस्तानी भाषा "प्रान्तीय भाषाओंका स्थान ले, अैसा नहीं सोचा गया है; बल्कि यह अिरादा रखा गया है कि वह अुनकी पूरक बने और आन्तरप्रान्तीय संबंधके लिअे काममें ली जाय"। (गांधीजी) अब अगर हम अपने अिस निश्चयको छोड़कर प्रान्तीय भाषाओंको अुनके आदर और प्रतिष्ठाके पदसे हटायें — अर्थात् हर प्रकारके शिक्षणका माध्यम बननेके अुनके खुले हकको अुनसे छीनें — और अुस जगह राष्ट्रभाषाको बैठायें, तो राष्ट्रभाषाके आन्दोलनकी सारी अिमारत ही अेकदम ढह जायगी और हमारा अेक पीढ़ीसे भी ज्यादाका प्रयत्न धूलमें मिल जायगा। और अुसका नतीजा यह होगा कि अंग्रेजी चालू ही रहेगी।

(गुजरातीसे)

तालाब और बांध

सरकारकी पंचवर्षीय योजनामें अधिक ध्यान खींचनेवाली चीज है करोड़ों रुपये खर्च करके बांधे जानेवाले कुछ नदियोंके बांध। ये बांध अिंजीनियरीके महान साहस कहे जा सकते हैं। यह काम पूरा हो जानेसे अेक तरहकी हमारी वाहवाही होगी और शायद विदेशोंमें हमारा नाम भी बढ़ेगा। ये बांध बंध जायं, तो देशकी लाखों अेकड़ जमीनमें सिंचाअी हो सकेगी। जो पानी बहकर समुद्रमें मिल जाता है, वह अिकट्ठा किया जा सकता है। अुससे बिजली भी मिलेगी।

अिस तरह यह विचार अच्छा है। लेकिन अुसकी मर्यादा भी है, यह हमें याद रखना चाहिये। सिंचाअीके लिअे पानी मुहैया करनेके दूसरे रास्ते भी हैं और अुन पर बड़ी योजनाओंके बिना भी अमल किया जा सकता है। जैसे, अनुकूल जगहों पर बड़े तालाब भी यह काम दे सकते हैं। छोटी-छोटी नदियोंमें पाल बांधकर भी पानी अिकट्ठा किया जा सकता है। अिस तरहकी योजनाके लिअे अनेकों स्थान सोचे जा सकते हैं। अिस काममें लोगोंको

www.vinoba.in

शामिल करके अुस जगहकी आबादीका आलस्य और बेकारी दूर की जा सकती है। अलबत्ता, अिस काममें भी कुशल अिंजीनियरोंको विस्तृत योजना बनाकर अुसके अमलके लिअे ब्यौरेवार आयोजन करना पड़ेगा। पर अिसमें बहुत बड़े अिंजीनियरोंकी जरूरत नहीं होगी। न बड़े-बड़े यंत्रोंकी जरूरत होगी, न बड़े भारी मेमारी कामकी जरूरत होगी। बेशक, अिस काममें भी करोड़ों रुपये खर्च जा सकते हैं। लेकिन विकेन्द्रित ढंग पर और लोगोंका व्यापक सहकार लेकर। अुसमें विशालताकी चमक शायद नहीं होगी; फिर भी काम तो होगा ही और लोगोंकी तालीमका अमूल्य लाभ भी मिलेगा। संभव है, यह सुझाव मिलके सामने चरखे जैसा लगे। और कुछ हद तक अैसा कहना सच भी है। अिसमें भी चरखे या खादीका अर्थशास्त्र और मानवदृष्टि है। अिसलिअे योजना बनानेवालोंको अिस तरफ भी ध्यान देना चाहिये था। बड़े-बड़े बांध बांधना ठीक हो, तो अुनके साथ अैसी छोटी मालूम होनेवाली लेकिन खूब कीमती योजनाको भी गूंथ देना चाहिये। अिसकी अेक खूबी यह है कि अिसके लिअे जिलावार योजनायें बनाकर अुनमें लोगोंकी दिलचस्पी पैदा की जा सकती है। अिसमें आखिरमें जनताकी शक्ति भी बढ़ती है।

अहमदाबाद, २-८-'५१ मगनभाअी देसाअी

(गुजरातीसे)

राजनैतिक असहिष्णुता

अग्रलेखमें मैंने जिक्र किया है कि आजके युगमें हिन्दू समाजमें असहिष्णुता और धर्मांधताका अेक नया दौर आया है। मुझे यह जानकर खेद हुआ कि यह प्रवृत्ति कांग्रेसमें भी व्याप्त हो गअी है और हमारे राजनैतिक जीवनमें वह बढ़ती-फैलती जा रही है। मुझे मालूम हुआ है कि कुछ समयसे जगह-जगह स्थानीय राजनैतिक दलोंमें अकसर अपने सदस्योंको अैसी सूचनायें दी जाती हैं कि वे प्रतिपक्षके राजनैतिक नेताकी सभामें न जायें, अुनके आयोजनोंमें भाग न लें और न अैसे किसी कार्यक्रममें ही सहकार करें, जिसकी व्यवस्था अुसके द्वारा की गअी हो — भले वह कार्यक्रम रचनात्मक ही क्यों न हो। कोअी कांग्रेसका आदमी प्रतिपक्षके किसी व्यक्तिका मेहमानकी तरह स्वागत भी न करे, अैसी कोशिश भी होती है। गांधीजी जब पहली बार बिहार गये, तब अंग्रेजी नौकरशाही अितनी असहिष्णु थी कि आचार्य कृपलानीको गांधीजीको अपने घरमें रखनेकी हिम्मत दिखानेके लिअे अपनी प्रोफेसरशिप छोड़नी पड़ी थी। यह घटना सन् १९१७ की है। सब लोग जानते हैं कि तबसे लगातार वे गांधीजीके साथ रहे। कुछ ही महीने पहले तक वे कांग्रेसी ही थे। अभी कांग्रेस अध्यक्षका जो पिछला चुनाव हुआ, अुसमें प्रगट हुआ कि लगभग आधी कांग्रेसका और प्रधान मंत्रीका भी विश्वास अुन्हें प्राप्त था। कांग्रेसके मुरब्बियों (हाअी कमाण्ड) ने अुनसे कांग्रेसमें ही बने रहनेका अनुरोध भी किया। पर अुन्होंने अलग होनेका निर्णय किया और प्रगट रूपसे यह अिच्छा जाहिर की है कि वे अगले चुनावोंमें मौजूदा कांग्रेस सरकारको हटाना चाहते हैं। अुनका यह निर्णय सही हो या गलत, अुसमें सयानपन हो या बेवकूफी, और अपनी कोशिशमें वे कामयाब हों या नहीं, यह अलग सवाल है। लेकिन अुन्होंने जो रास्ता लिया है, वह पूरी तरहसे लोकशाहीका रास्ता है; और अगर वे कांग्रेसका विरोध कर रहे हैं, तो अुसका यह अर्थ नहीं है कि वे हिन्द स्वराज्यके शत्रु बन गये हैं। ठीक अुसी तरह जैसे सन् १९१७ में गांधीजी ब्रिटिश शासन पद्धतिका विरोध करते हुअे भी ब्रिटिश राजके शत्रु नहीं थे।

आज सन् १९५१ में वही परिस्थिति दुहराअी जा रही है। वे ही मौजूदा सरकारके राजनैतिक विरोधी हैं और यह सरकार अुनके खिलाफ अुसी नीतिका अवलम्बन कर रही है, जिसका अवलम्बन ब्रिटिश सरकारने गांधीजी और अुनके साथियोंके खिलाफ तब किया था। जहां कहीं भी वे जाते हैं, सी० आअी० डी० के चर अुनका पीछा करते हैं, पुलिसके आदमी अुनकी सभाओंमें कुर्सी-टेबल लगाकर अुनके भाषणकी रिपोर्ट लिखते हैं, मानो लोगोंको सूचित करना चाहते हों कि अुन्हें सरकार शंकाकी निगाहसे देखती है। कांग्रेस संस्थाओंको अैसे परिपत्रक भेजे जाते हैं कि लोगोंसे कहो कि वे अुनकी सभाओंमें न जायें। मुझे मालूम हुआ है कि अुनके अेक दौरेमें स्थानीय कांग्रेसियोंने अिस बातका ध्यान रखा कि कोअी कांग्रेसी अुन्हें अपना मेहमान न बनाये। अेक स्थानीय रचनात्मक संस्था द्वारा अुन्हें संस्थाका मुआअिना करनेके लिअे बुलाने पर अिन लोगोंने अपनी नाराजी भी जाहिर की।

मैं अैसा नहीं मानता कि चोटीके नेता अिस व्यवहारको मान्य करते हैं। मंत्री लोग तो अुनका बहिष्कार नहीं करते। लेकिन छोटे-छोटे नेता और अखबार अिस तंगदिलीको बढ़ावा देते हैं। यह असहिष्णुता दिलके छोटेपनकी सूचक है। दूसरी विचारधाराओंके साथ अिस तरह पेश आनेकी मनोवृत्ति भारतीय खानदानियतकी निशानी नहीं है। अभी-अभी तक अैसे कअी परिवार रहे हैं, जिनमें परिवारका मुखिया अुदार मतवादी है, अुसका लड़का कांग्रेसी है, और पौत्र-पौत्रियोंमें कोअी गांधीवादी है, तो कोअी समाजवादी या साम्यवादी रायका अनुयायी — यहां तक कि सम्प्रदायवादी भी। लेकिन सबके सब अुसी अेक घरमें शांतिपूर्वक रहते रहे हैं। यदि कांग्रेसी या गांधीवादी सदस्यने आज्ञाभंगके आन्दोलनमें भाग लिया, तो अुसने व्यक्तिशः अुसका फल भोगा; और यदि सम्प्रदायवादी या साम्यवादी लड़केने किसी हिंसक कार्रवाअीमें हिस्सा लिया, तो अुसने भी अुसका फल व्यक्तिशः ही भोगा। परिवारका यह मुखिया राज्यका मंत्री या शासनका बड़ा अधिकारी ही क्यों न रहा हो, अुसके पुत्रने भी सजा भोगी। अुदाहरणके लिअे, डॉ० पी० सुब्बरायनके लड़केने। लेकिन यह सजा किसी खास विचारधारामें अुसका विश्वास होनेके कारण नहीं, बल्कि कानूनका भंग करनेके लिअे दी गअी। और अुसने सजा पाअी तो घरके लोगोंने अुसे घरसे निकाल नहीं दिया।

कांग्रेसी लोगोंकी अगर कृपलानीजीसे हर सवाल पर पटती नहीं है तो न सही। मैं भी अुनके साथ कअी सवालों पर अेकराय नहीं हूं। लेकिन अिस बातसे अिनकार नहीं किया जा सकता कि कांग्रेसको, किसी और कारणसे नहीं तो लोगोंके मत लेनेके लिअे ही, वे भारी बुराअियां, जिनके खिलाफ आचार्य कृपलानी अपनी आवाज अितने जोरोंसे बुलंद किये जा रहे हैं, दूर करनी पड़ेंगी। क्या यह कम दुःखकी बात है कि साठ बरसकी पुरानी कांग्रेसने अितने बड़े पैमाने पर और अितनी जल्दी अपनी प्रतिष्ठा खो दी, और गांधी टोपी व खादी आम लोगों द्वारा भ्रष्टाचार, बेअीमानी और दूसरी कअी बुराअियोंका प्रतीक मानी जाने लगी है?

लेकिन कांग्रेस अपने विरोधियोंके हमलोंसे या मित्रोंकी सलाहसे लाभ अुठावे या न अुठावे, सारी राजनैतिक संस्थाओंको अिस संकुचितता से बचनेकी सावधानी रखनी चाहिये। यह संकुचितता तो जात-पांतका ही अेक बदला हुआ रूप है।

वर्धा, ६-८-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
डांगे-विनोबा पत्रव्यवहार		२१७
कोढ़-कामकी तालीम		२१९
साम्यवादके बारेमें	कि० घ० मशरूवाला	२२०
'पहली पंचवर्षीय योजना' पर टीका — २	जो० कॉ० कुमारप्पा	२२१
अुच्च शिक्षाका माध्यम	मगनभाअी देसाअी	२२२
तालाब और बांध	मगनभाअी देसाअी	२२३
राजनैतिक असहिष्णुता	कि० घ० मशरूवाला	२२४
टिप्पणी :		
अभिनन्दन		२२५

www.vinoba.in